दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-X (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-HL10

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): जगदीश

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10 11-9-18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	2	5	1	2	7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): [signature]

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) गदराने तन गोरटी, ऐपन-आड़ लिलार।
हूठयौ दै, इठलाइ, दृग करै गँवारि सुवार।।

संदर्भ - प्रस्तुत दोहा रीतिसिद्ध काव्य के शिखर कवि बिहारीलाल द्वारा रचित है जो उनके एकमात्र ग्रंथ 'बिहारी सतसई' में संकलित है।

प्रसंग - उपर्युक्त दोहे में बिहारी ग्रामीण परिवेश में नारी सौन्दर्य को चित्रित कर रहे है।

व्याख्या - बिहारी कहते हैं कि ग्रामीण परिवेश में नायिका का शरीर गदराया हुआ है तथा उसके ललाट पर विभिन्न भाव आ रहे है तभी वह इठलाकर चलती है तथा आँखों से मारक तरीके से देखती है किन्तु है वह गँवार की गँवार।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

इस स्थान में प्रश्न ... अतिरिक्त कुछ ... (... do not write ... except the ... number in ...)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष - बिहारी नागर कवि हैं तथा नागर कवि होने के कारण वे ग्रामीणों के प्रति दोयम नज़रिया रखते हैं। वे ग्रामीण युवती के सौंदर्य का वर्णन करते हुए भी उसे 'गंवार' कहने से नहीं चूकते।

- बिहारी अनुभावों के कवि हैं तथा वे अपने काव्य में बिम्बों का निर्माण करते चलते हैं जो उक्त दोहे में दृष्टव्य है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योति:प्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

सन्दर्भ - प्रस्तुत काव्यावतरण छायावाद के सर्वाधिक प्रयोगशील कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' द्वारा रचित लम्बी प्रबन्धात्मक कविता 'राम की शक्तिपूजा' से उद्धृत है।

प्रसंग - युद्ध से थककर लौटने के बाद राम चिन्तित हैं तथा अपनी क्षमताओं पर सन्देह कर रहे हैं। ऐसे में सीता की याद उनमें शक्ति का संचार कर देती है।

दृष्टि
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ भी do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

व्याख्या - राम निराश हैं क्योंकि उनकी पारम्परिक शक्ति रावण के समक्ष लाचार हो रही है ऐसे में सीता की स्मृति उन्हें घोर अंधकार में विद्युत की चमक के समान प्रकाशित कर जाती है। उन्हें जनक वाटिका में पहली बार सीता से नज़रों का मिलना याद आ जाता है। पहली बार सीता की काँपती नज़रों को देखने पर राम को स्वर्गानुभूति होती है तथा प्राकृतिक सौन्दर्य अद्भुतपूर्व रूपेण दिखने लगता है।

विशेष - राम के मर्यादा पुरुषोत्तम व्यक्तित्व में शृंगार के मधुर पक्ष को समाविष्ट किया गया है।

- भाव का समास गुण दृष्टव्य है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखण्ड है,
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तण्ड है।
अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति-कला,
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन ही क्या भला?

प्रसंग - दी गई काव्य पंक्तियाँ राष्ट्रकवि नाम से सम्मानित खड़ी बोली हिन्दी के आरम्भिक कवि मैथिलीशरण गुप्त की कालजयी रचना भारत - भारती से उद्धृत हैं।

सन्दर्भ - गुप्त जी भारतीय प्राचीन संस्कृति के वर्तमान में पतन पर चिन्ता जताते हुए उन्नति - अवनति के प्रश्नों पर विचार कर रहे हैं।

व्याख्या - गुप्त जी कहते हैं कि जो प्रगति करता है उसका पतन भी निश्चित है क्योंकि उतार - चढ़ाव प्रकृति का शाश्वत नियम है। सूर्य आकाश में चढ़ता है तो शाम होते - होते अस्ताचल की ओर भी चला जाता

दृष्टि
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है अतः अवनति से निराश होने की आवश्यकता नहीं है। अवनति न होने का अर्थ है कि कभी उन्नति ही नहीं हुई अतः अवनति की स्थिति भूतकाल की उन्नति का सूचक है।

विशेष - खड़ी बोली की आरम्भिक इतिवृत्तात्मक तथा अभिधात्मक प्रवृत्तियाँ स्पष्ट तौर पर देखी जा सकती है।
- उद्बोधन काव्य के तौर पर उपर्युक्त पंक्तियाँ कथ्य के सम्प्रेषण में सफल है।

प्रासंगिकता - वर्तमान में भी निराश मन के उद्बोधन हेतु यह काव्यांश प्रासंगिक है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

सन्दर्भ - प्रस्तुत काव्यांश उत्तर छायावादी युग के राष्ट्रवादी कवि रामधारी सिंह दिनकर की कविता 'कुरुक्षेत्र' से उद्धृत है।

प्रसंग - भीष्म पितामह युधिष्ठिर को युद्ध की नैतिकता-अनैतिकता के प्रश्न पर उत्तर दे रहे हैं तथा इसी क्रम में वे ये पंक्तियाँ कहते हैं।

व्याख्या - पितामह कहते हैं कि अन्याय के बढ़ जाने के कारण ही समाज में युद्ध की आवश्यकता होती है अतः युद्ध की जिम्मेदारी अन्याय का साथ देने वाले की होती है।

अन्याय को चुनौती देना तथा

दृष्टि
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ
do not write except the number in e)

न्याय के पक्ष में युद्ध करना पाप नहीं है बल्कि पाप तो अन्याय का साथ देकर युद्ध को आमंत्रित करता है।

विशेष – युद्ध के औचित्य पर सूक्ष्मता से विचार किया गया है।
– शब्दावली में ओज गुण पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है।
– दिनकर द्वितीय विश्व युद्ध के सन्दर्भ में महाभारत के रूपक से चिन्तन कर रहे हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।
नित्य समरसता का अधिकार उमड़ता कारण-जलधि समान,
व्यथा से नीली लहरों बीच बिखरते सुख-मणिगण द्युतिमान।

सन्दर्भ - प्रस्तुत काव्यान्तरण छायावाद के वरिष्ठ कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित आधुनिक काल के भावप्रधान महाकाव्य 'कामायनी' से उद्धृत है।

प्रसंग - कामायनी की नायिका श्रद्धा ने 'श्रद्धा खण्ड' में मनु से बातचीत के दौरान इन पंक्तियों में अपना जीवन-दर्शन बतलाया है।

व्याख्या - श्रद्धा कहती है कि समाज में असमानता की वजह से यह सुखद संसार पीड़ित है। कुछ लोगों से सुखी होने तथा कुछ के दुखी होने के कारण जीवन का सार समाप्त हो रहा है। ऐसे सुख दुःख

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'पद्मावत' अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्मावत मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा लिखित प्रबंध काव्य है जो समीक्षकों के बीच काफी विवादित रहा है।

विवाद का एक विषय यह है कि पद्मावत समासोक्ति है या अन्योक्ति। वस्तुतः समासोक्ति तथा अन्योक्ति दो अलंकार हैं। जिस रचना में प्रस्तुत अर्थ केवल अप्रस्तुत अर्थ को व्यक्त करने का माध्यम बना हो उसे अन्योक्ति तथा जिस रचना में प्रस्तुत अर्थ महत्वपूर्ण हो व साथ-साथ अप्रस्तुत अर्थ भी हो तो उसे समासोक्ति कहा जाता है।

क्या पद्मावत अन्योक्ति है?

पद्मावत के संदर्भ में ग्रियर्सन, बाबू गुलाब राय जैसे समीक्षकों का मानना है कि पद्मावत अन्योक्ति है क्योंकि लौकिक कथा केवल आध्यात्मिक अर्थों को प्रकट करने का माध्यम

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जनकर आई है। इस तर्क के पीछे वे पद्मावत के अन्त में आए एक दोहे को आधार बताते हैं -

" तन चितउर मन राजा कीन्हा
हिय सिंघल बुद्धि पद्मिनी चीन्हा
गुरु सुवा जेइ पंथ दिखावा
बिनु गुरु जगत निरगुन को पावा।"

किन्तु विजय देव नारायण साही तथा शुक्ल जी जैसे समीक्षक इस दोहे को प्रक्षिप्त मानते हैं। उनके पीछे उनका तर्क है कि यह प्रतीक कोस अन्तर्विरोधों से भरा पड़ा है तथा कथा के इतर हिस्से पर प्रतीक लागू नहीं होते।

क्या पद्मावत ~~अन्योक्ति~~ समासोक्ति है?

शुक्लजी मानते हैं कि अलौकिक अर्थ के समझे बिना भी पद्मावत की कथा का अर्थग्रहण संभव है तथा अलौकिक अर्थ के प्रतीक कथा के इतने भाग पर लागू नहीं होते। अतः

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्मावत समासोक्ति है। वस्तुतः शुक्ल जी ने पद्मावत की समीक्षा सूफियों की उस प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर की जहाँ वे लौकिक कथाओं को बन्दे के खुदा से मिलन का वर्णन करने का माध्यम बनाते हैं।

साही तथा शिरेफ का मत - आधुनिक समीक्षक विजय देव नारायण साही पद्मावत को न समासोक्ति मानते और न ही अन्योक्ति। उनके अनुसार पद्मावत में आया तसव्वुफ केवल मुहावरे के रूप में आया है जिसे मुख्य तो क्या प्रासंगिक अर्थों में से भी नहीं माना जा सकता। कवि का मूल लक्ष्य मानव का इहलौकिक प्रेम दिखलाना था।

कथा के इस ढाँचे को उन्होंने प्रकृत काव्य नाम दिया जो कि मौलिक था। इसका अर्थ ऐसी रचना से है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

ा इस स्थान में प्रश्न
ा के अतिरिक्त कुछ
खें।
ase do not write
hing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिसमें कोई कथा कहीं-कहीं पर समानान्तर अर्थ धारण करती हो किन्तु वह अर्थ अत्यन्त गौण हो।

वर्तमान में पद्मावत को प्रकृत काव्य मानने पर सहमति है। तथा यदि पद्मावत को अन्योक्ति या समासोक्ति की कसौटी पर ही कसना हो तो इसे समासोक्ति के नज़दीक माना जाना चाहिए।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये।

बिहारी रीतिसिद्ध काव्य के शिखर कवि है जो दरबारी माहौल में रहते हुए शृंगार तथा रसिकता पर कविताएँ लिखते हैं।

दरबारी कवि के सामने दबाव रहता है कि उसे कम से कम शब्दों में दरबारी रसिकों को ऐन्द्रिक अनुभूति करवाते हुए आह्लादित करना होता है।

ऐसे में बिहारी अपनी अनुभाव योजना को केन्द्र में रखकर बिम्बों की योजना करते हैं। बिम्ब का अर्थ पाठ्य या श्रव्य कविता को भावक की ऐन्द्रिक अनुभूति का विषय बना देने से है।

बिहारी अपने दोहों में विभाव पक्ष से बचते हुए अनुभावों की सघन व संश्लिष्ट अभिव्यक्त करते हैं जिससे दरबारी रसिकों को एक चलचित्र सा देखने का अहसास होता है। उदाहरण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के लिए निम्नलिखित दोहे में बिहारी ने नायक - नायिका की क्रीड़ाओं का चित्र खींचा है -

"कहत, नटत, रीझत, खीझत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत है नैननु हीं सों बात"

बिहारी ने अपनी भक्ति भावना की प्रवृत्ति के दौरान भी राधा - कृष्ण की क्रीड़ाओं को बिम्बात्मक बना दिया है। जैसे -

"बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय
सौंह करे भौंहनु हँसे दैन कहै नट जाय"

बिहारी ने न केवल श्रृंगार के बल्कि समाज में आडम्बरों, राजनीतिक जीवन तथा ग्रामीण परिवेश से जुड़े बिम्ब भी खींचे हैं। जैसे उनका राजनीति पर लिखा दोहा -

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सों बंध्यो आगे कौन हवाल"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कौन हवाल !"

बिहारी ने एकल बिम्बों के साथ संश्लिष्ट बिम्ब भी खींचे हैं जहाँ बिम्ब एकाधिक इन्द्रियों के स्तर पर सक्रिय होते हैं. जैसे - रस, स्वाद, गंध, स्पर्श आदि।

बिहारी ने लक्षित बिम्बों के साथ उपलक्षित बिम्बों की भी योजना की है। उपलक्षित बिम्बों में वे अमूर्त से अमूर्त भावों को प्रतीक से मूर्त बना देते हैं।

- "तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रति रंग
  अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग"

वस्तुतः बिहारी की तुलना बिम्बों के क्षेत्र में भक्तिकाल में सूर तथा आधुनिक काल में निराला जैसे कवियों से ही संभव है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि ... Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कुरुक्षेत्र' के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कुरुक्षेत्र' दिनकर द्वारा लिखित रचना है जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद युद्ध की समस्या पर विचार करने के लिए महाभारत के युद्ध के आलोक में लिखी गई है।

इस रचना के शिल्प पर निम्न बिन्दुओं के आलोक में विचार किया जा सकता है -

काव्यरूप - कुरुक्षेत्र का काव्यरूप विवाद का विषय है क्योंकि दिनकर प्रबंध लिखना चाहते थे किन्तु घटनाओं व पात्रों की संक्षिप्तता के कारण कुरुक्षेत्र की प्रबन्धात्मकता बाधित हुई है। डॉ. नगेन्द्र ने इसे चिन्तनप्रधान लम्बी कविता कहा है जिसे लेकर सहमति है।

भाषा - कुरुक्षेत्र की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है तथा इसमें ऐतिहासिक-पौराणिक पृष्ठभूमि के चलते

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तत्समीकृत शब्दावली की प्रधानता है।

उदा. -

ऊपर सब कुछ शून्य-शून्य है
कुछ भी नहीं गगन में।
जो कुछ है वह धर्मराज
मिट्टी में जीवन में॥

दिनकर की भाषा स्वाभाविक तौर पर ओजगुण धारण करती है जो कि उपर्युक्त कविता में भी दिखता है।
जैसे -

नरक उनके लिए जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

बिम्ब - दिनकर की भाषा चूंकि स्थानात्मक है अतः वह स्वाभाविक तौर पर बिम्बों का निर्माण करती चलती है। कुरुक्षेत्र में विराट व भयानक बिम्बों का निर्माण हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रतीक - स्वाभाविक प्रतीकों की उपस्थिति से कथ्य का प्रभावी संप्रेषण हुआ है अन्यथा जटिल प्रतीकों के प्रयोग से दिनकर बचे हैं। जैसे

"हटो व्योम के मेघ स्वर्ग लूटने हम जाते हैं।
दूध, दूध! हे वत्स तुम्हारा दूध ढूंढने हम जाते हैं।"

अलंकार - दिनकर शब्दालंकारों के मोह से बचे हैं किन्तु ओज गुण व विराट बिम्बों की योजना के चलते ध्वनियों की आवृत्ति हुई है जिससे अनुप्रास दर्शनीय बन पड़ा है।

वस्तुतः कुरुक्षेत्र हिन्दी साहित्य में संवेदना ही नहीं शिल्प को लेकर भी विशिष्ट स्थान रखती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'ब्रह्मराक्षस' कविता मुक्तिबोध द्वारा लिखी गई कविता है जो प्रगतिवादी संवेदना की कविता है। मुक्तिबोध की कविताएँ विषमतामूलक समाज की पीड़ा से व्यथित होकर लिखी गई हैं। अतः स्वाभाविक तौर पर उनकी कविताओं में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष एक अनिवार्य विषय के रूप में मौजूद रहता है।

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष को समझने के लिए यह जानना होगा कि मुक्तिबोध ने तीन प्रकार के बुद्धिजीवियों का उल्लेख किया है -

(i) रक्तपायी वर्ग से नाभिनालबद्ध - आत्मचेतस्
(ii) अलग बुद्धिजीवी - आत्मचेतस्
(iii) आत्मचेतस् तथा विश्वचेतस् के मध्य संघर्ष करने वाले बुद्धिजीवी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इनमें से तीसरे प्रकार के बुद्धिजीवी जानते हैं कि उनके ऊपर ऐतिहासिक दायित्व है कि वे निम्न वर्ग के पक्ष में कार्य करें किंतु वे अपने मोह के दायरों में बँधे रह जाते हैं तथा दायित्व बोध के दबाव में पिसते रहते हैं।

ब्रह्मराक्षस भी तीसरे प्रकार का बुद्धिजीवी था जिसमें व्यक्तिवादी चेतना के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारियों की चेतना भी थी। वह जीवन भर अपने व्यक्तित्व को संगत बनाने का प्रयास करता रहा ताकि वह या तो आत्मचेतस हो जाए या पूर्ण विश्वचेतस हो जाए। इस द्वन्द्व को मुक्तिबोध कविता में निम्न प्रकार दिखलाते हैं:—

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

"पिस गया वह भीतरी औ' बाहरी
दो कठिन पाटों के बीच
ऐसी ट्रेजडी है नीच!"

जब ब्रह्मराक्षस ने आत्मचेतन होकर धन कमाने की चेष्टा की तो उसकी अन्तरात्मा उसे कचोटने लगी तथा उसे दिन-रात बेचैन किए रहती। इस बेचैनी का प्रतीकात्मक वर्णन कविता में 'तहखाने की सीढ़ियों' के प्रतीक से किया गया है।

तदुपरान्त ब्रह्मराक्षस ने गणित के सिद्धांतों की पूर्ण वस्तुनिष्ठता से भरी विश्वचेतना का संधान शुरू किया जो उसकी इतनी बड़ी भूल थी क्योंकि दशमलव के अन्तरों से भी विहीन पूर्ण विश्वचेतना की उपलब्धि असंभव थी। ऐसे में वह अपने से ही जूझता रहा और मर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गया।

"वह कोठरी में अपना गणित
करता रहा और
मर गया
मरे पक्षी सा
विदा ही हो गया"

अब उसने ब्रह्मराक्षस योनि में जन्म लिया है तथा अपनी गलती को सुधारने का प्रयास कर रहा है जहां वह मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष को समाप्त करने का प्रयास नहीं करेगा बल्कि इस आत्मसंघर्ष को अनिवार्य मानकर जनजीवन में उतरकर धरातल स्तर पर वंचितों के पक्ष में कार्य करेगा।

(ख) कामायनी में निहित जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ [illegible] (... do not write ...ng except the ...on number in ...ace)

कामायनी 1936 के दौर में लिखी गई रचना है जिस पर तत्कालीन परिस्थितियों का व्यापक प्रभाव पड़ा।

अपने समय में व्याप्त अति भौतिकता, अति बौद्धिकता तथा अति वैज्ञानिकता को प्रसाद ने कामायनी के माध्यम से सुलझाने का प्रयत्न किया तथा कामायनी का जीवन दर्शन इसी लक्ष्य को ध्यान में रखता है।

कामायनी का मूल दर्शन शैवाद्वैतवाद या प्रत्यभिज्ञा दर्शन है जिसके अनुसार जीवन की मूल समस्या इच्छा, क्रिया तथा ज्ञान का असंगत होना है। इस समस्या का समाधान समरसता की स्थिति है जहाँ व्यक्ति सुख-दुःख के द्वैत से परे उठकर आनन्द की स्थिति महसूस करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
[illegible] ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मनु की मूल समस्या विषमता की ही है जिसे प्रसाद इन शब्दों में बतलाते हैं -

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
तीनों आपस में न मिल सके
यह विडम्बना जीवन की॥

मनु इस विषमता के चलते श्रद्धा के मना करने के बावजूद बुद्धि के मार्ग पर चलता है तथा इड़ा के साथ मिलकर भौतिकता का विकास करता है किन्तु उसे अधिकारों का पूर्ण भोग करने की इच्छा अनैतिक कार्य करने हेतु बाध्य करती है। वस्तुतः मनु में मनु बुद्धि के कारण जीवन के संघर्षों में पराजित होता है तथा पुनः श्रद्धा की शरण में जाता है। श्रद्धा उसे समरसता की स्थिति में ले जाती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समस्त थे जड़ या चेतन सुन्दरता आकार था, चेतनता एक विलसती, आनन्द अखण्ड घना था॥

इस प्रकार कामायनी जीवन की समस्याओं के शैवाद्वैतवाद के आलोक में सुलझाने का प्रयत्न करती है। इसके अलावा कामायनी गाँधी के अहिंसावाद, फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित मनोविश्लेषणवाद तथा स्पेंसर के शक्ति स्पर्द्धा में योग्यतम की पुनर्जीविता आदि दर्शनों से प्रभाव ग्रहण कर एक समुचित जीवन दर्शन पेश करती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'राम की शक्तिपूजा' एक संश्लिष्ट अर्थ विधान की कविता है जो सन्दर्भ की भद्र प्रतीकात्मक स्तर पर समकालीन राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के सन्दर्भों को लेकर चलती है।

1936 में गांधीजी का एक वर्ष में स्वराज का वादा खण्डित हो चुका था तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन भी स्वाधीनता दिलाने में नाकाम रहा था। ऐसे में पूरा आन्दोलन शक्तिहीनता की स्थिति में था। राम की शक्तिपूजा के राम भी कविता के आरम्भ में पारम्परिक शक्तियों के नाकाम हो जाने से विचलित हैं।

गांधीजी हिंसा मार्ग की उपलब्धता के बावजूद उनके प्रयोग से बचते हैं ~~क्योंकि~~ तथा इसी प्रकार हनुमान की असीम शक्ति के प्रयोग से राम बचते

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है।

गांधीजी के पारम्परिक अस्त्रों की विफलता के बाद राष्ट्र को एक नए व नवाचारी प्रयोग की आवश्यकता थी जिसे निराला ने कविता में शक्ति की मौलिक कल्पना कहा है।

शक्ति की मौलिक कल्पना मूलतः ~~[illegible]~~ अधोमुखी कुण्डलिनी को ऊर्ध्वमुखी करने से जुड़ी थी। यह प्रतीकात्मक स्तर पर भारतीय जनमानस में संचित शक्ति को जगाने को प्रतिबिम्बित करता है।

राम द्वारा आँख निकाल कर अर्पित कर देने का प्रयोग स्वाधीनता आंदोलन को आत्मोत्सर्ग का संदेश देता है जिसे महात्मा गांधी ने 1942 में "करो या मरो" के शब्दों में कहा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ ें।

e do not write ng except the on number in ace)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राम के युद्ध में तटस्थ होना शक्ति की कुपात्रता करने का प्रसंग महात्मा गाँधी के संघर्ष विराम-संघर्ष की नीति के प्रतीक को धारण करता है।

इसी प्रकार शक्ति का राम के बदन में लीन होना नर क्रान्तिक नेतृत्व की तलाश का संकेत है।

वस्तुतः छायावादी कवि समकालीन घटनाओं का रोजनामचा नहीं लिखते बल्कि मूल्यों को अपने काव्य में धारण करते हैं। राम की शक्ति पूजा भी समकालीन मूल्यों का धारण करने वाली कविता है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

संदर्भ - गोदान (प्रेमचंद कृत)

व्याख्या - लेखक की महिला पात्र कहती है कि वर्तमान में पूँजीवाद के युग में धन का केन्द्रीय महत्व है। व्यक्ति की शिक्षा, वंश, कुल इत्यादि पहचानें धन की शक्ति के समक्ष गौण हो जाती है। इतिहास में ऐसा कभी-कभार ही होता है कि धन को आन्दोलन की स्थिति में कम महत्व मिले।

महिला पात्र स्वयं का ही उदाहरण देते हुए कहती है कि मेरे दवाखाने में किसी गरीब औरत के आने पर मैं उसकी उपेक्षा करती हूँ वहीं किसी

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

धनाढ्य परिवार की महिला के आने पर मैं उसे भगवान की तरह मानकर उनका स्वागत करती हूँ क्योंकि उनसे मुझे धन की प्राप्ति होने की ज़्यादा संभावनाएं है।

विशेष - पूँजीवादी युग की धन लोलुपता को सपाट तरीके से पेश किया गया है
- रूपक तथा उत्प्रेक्षा (मानो वह ...) का प्रयोग द्रष्टव्य है
- निम्नात्मकता का प्रयोग हुआ है

प्रासंगिकता - धन पर टिकी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की क्रूरता पर चोट की जाने की साहित्यिक जिम्मेदारी प्रासंगिक है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ [न लिखें]।

[Pleas]e do not write [anyth]ing except the [quest]ion number in [this s]pace)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है, इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिये अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन किये रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती है। इस अनुभूति-योग के अभ्यास के हमारे मनोविकार का परिष्कार तथा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित निबन्ध संग्रह चिन्तामणि (भाग 1) में संकलित निबन्ध कविता क्या है से उद्धृत है।

प्रसंग - शुक्ल जी कविता को 'भाव योग' मानकर उसे मनुष्य को मनुष्यता के उच्च धरातल पर ले जाने का माध्यम मानते हैं। यही भाव इस गद्यांश में व्यक्त हुए हैं।

व्याख्या - शुक्लजी कहते है कि कविता मानव को स्वार्थों से परे ले जाती है तथा उसे मनुष्यता की ऊँची भावभूमि पर ले जाती है जहाँ से वह समस्त चराचर जगत के साथ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साम्य महसूस करता है उसकी सोच तथा अनुभूतियों का दायरा व्यापक हो जाता है तथा वह समस्त प्राणियों के कल्याण के बारे में सोचने लगता है।

विशेष:-

- आचार्य शुक्ल ने इस निबंध में अपनी काव्य सम्बन्धी मान्यताओं का प्रतिपादन किया है।
- उन्होंने कविता को ज्ञानयोग व कर्मयोग के समान 'भावयोग' का दर्जा दिया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) राष्ट्रनीति, दार्शनिकता और कल्पना का लोक नहीं है। इस कठोर प्रत्यक्षवाद की समस्या बड़ी कठिन होती है। गुप्त-साम्राज्य की उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ उसका दायित्व भी बढ़ गया है; पर उस बोझ को उठाने के लिये गुप्त-कुल के शासक प्रस्तुत नहीं, क्योंकि साम्राज्य-लक्ष्मी को वे अब अनायास और अवश्य अपनी शरण आनेवाली वस्तु समझने लगे हैं।

संदर्भ - उपर्युक्त गद्यांश स्वच्छंदतावादी नाटककार जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक स्कंदगुप्त से उद्धृत है।

प्रसंग - उपर्युक्त प्रसंग में साम्राज्य के शासकों के उत्तरदायित्वों का निरूपण हुआ है।

व्याख्या - प्रसाद लिखते हैं कि राजनीति का मर्म भावुक कल्पनाओं से परे है। इसमें हर बार नए कटु यथार्थ का सामना करना पड़ता है। यहाँ पलायनवादियों के लिए कोई स्थान नहीं है। गुप्त साम्राज्य ज्यों-ज्यों विशाल हुआ है, उसके साथ-साथ यहाँ के शासकों की जिम्मेदारियाँ भी विस्तृत हुई हैं। लेकिन विडम्बना यह है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कि गुप्त कुल के शासक उस साम्राज्य और धन-सत्ता को अनायास पाकर अपना हक समझ लेते हैं तथा कर्तव्य पथ से विमुख हो रहे हैं।

विशेष - स्कंद का पलायन करने का भाव उपर्युक्त विचार से संगत नहीं है क्योंकि स्कंदगुप्त योगियों की समाधि तथा बौद्धों का निर्वाण चाहता है जबकि यहाँ शासक को जिम्मेदारी निर्वहन की बात की गई है।

प्रासंगिकता - वर्तमान समय में चुनाव के उपरान्त अपनी जिम्मेदारी भूल जाने की प्रवृत्ति वाले राजनेताओं के संदर्भ में उपर्युक्त कथन प्रासंगिक हो उठता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) दिव्यो, मैं मृत्यु से भय नहीं मानता...मृत्यु क्या है? अस्तित्व का अन्त! जिसका अस्तित्व नहीं, जिसे अनुभूति नहीं, वह भय भी अनुभव नहीं कर सकता। भय है जीवित रह कर पीड़ा और पराभव सहने में, भय है जीवन भर की पीड़ा और पराभव से। तुम्हें अंक में लेकर समाप्त हो जाने से कौन इच्छा अपूर्ण रह जायेगी? फिर उसमें भय क्या? वह सुखद अस्तित्व का सुखद अन्त है परन्तु मैं युद्ध में पराक्रान्त होकर, पराभूत होकर जीवन भर तिल-तिल कर मरने की कल्पना सहन नहीं कर सकता। जीवन की सार्थकता अधिकार और सामर्थ्य में ही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ - प्रस्तुत अवतरण हिंदी के प्रगतिवादी उपन्यासकार यशपाल द्वारा रचित ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' से लिया गया है।

प्रसंग - पृथुसेन युद्ध में जाने से पूर्व दिव्या से अपने प्रेम का इजहार करता है इस सन्दर्भ में यह संवाद आता है।

व्याख्या - पृथुसेन दिव्या से कहता है कि मैं मरने से नहीं डरता क्योंकि मरने की पीड़ा क्षणिक है जबकि मैं अधूरेपन के साथ जीवन जीने में कहीं अधिक पीड़ा महसूस करता हूँ। यदि तुम्हारा साथ हो तो मेरे जीवन की हर इच्छा पूरी हो जाएगी। मैं

दृष्टि
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spa

तुम्हारा साथ पाकर युद्ध में लड़ सकता हूं किन्तु अधिकारविहीन, प्राणविहीन भाव से मैं लड़ नहीं पाऊंगा।

विशेष :-

- दिव्या के प्रति पृथुसेन के आकर्षण की तीव्रता को प्रस्तुत किया गया है।
- यशपाल प्रगतिवादी उपन्यासकार होते हुए भी दिव्या में वैयक्तिक प्रयोग से बचे हैं।
- तत्समीकृत शब्दावली से भाव प्रधान प्रसंग बेहद सुन्दर बन पड़े हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) पर प्यार की बेसुध घड़ियाँ, वे विभोर क्षण, तन्मयता के वे पल, जहाँ शब्द चूक जाते हैं, हमारे जीवन में कभी नहीं आये। तुम्हीं बताओ, आये कभी? तुम्हारे असंख्य आलिंगनों और चुम्बनों के बीच भी, एक क्षण के लिये भी तो मैंने कभी तन-मन की सुध बिसरा देने वाली पुलक या मादकता का अनुभव नहीं किया।

सन्दर्भ - उपर्युक्त संवाद नवलेखन के दौर की प्रतिनिधि रचनाकार मन्नू भंडारी द्वारा रचित कहानी "यही सच है" से लिया गया है।

प्रसंग - नायिका दीपा कहानी के पात्र संजय से उपर्युक्त कथन कहती है।

व्याख्या - नायिका कहती है कि रोमानी तथा कैशोर्य किस्म की भावनाओं से भरा प्रेम मेरे जीवन में कभी नहीं आ पाया। अनेक आलिंगन तथा चुम्बनों के बावजूद वह भावनात्मक कमी कायम ही रही। कभी भी बेसुध कर देने वाली भावुकता व मादकता मुझे महसूस नहीं हुई।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) भारत के संपूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता 'मेरीगंज' जिस रूप में 'मैला आँचल' में व्यक्त हुआ है, वह रूप गांवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का परीक्षण कीजिये। 20

मैला आँचल उपन्यास हिन्दी के आंचलिक उपन्यास धारा का औपन्यासिक प्रस्थान बिन्दु है। इस उपन्यास में पूर्णिया के एक गाँव मेरीगंज को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर रेणु ने अंचल का समस्त यथार्थ उभारा है।

मैला आँचल में मेरीगंज के प्रतीक से सम्पूर्ण ग्रामीण परिदृश्य का यथार्थ चित्रण हुआ है जिसके विविध बिन्दुओं को निम्न प्रकार देखा जा सकता है -

- सामाजिक दुर्दशा - जाति आधारित ध्रुवीकरण, जातीय संघर्ष तथा तनाव सम्पूर्ण भारतीय ग्रामीण परिवेश का यथार्थ है। ज्योतखी काका के मंगल तथा यादव, राजपूत संघर्ष इसी तनाव को धारण करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

· रेणु ने संथालिनों के सामूहिक बलात्कार के प्रसंग के माध्यम से तथा अपनी बेटी के इलाज के आनाकानी करने वाले हड् के माध्यम से नारी की दुर्दशा को चित्रित किया है।

· अंधविश्वास तथा धार्मिक भ्रष्टाचार को दर्शाने वाले प्रसंग जैसे मठों पर भ्रष्ट महंतों का अधिकार, धार्मिक क्रियाओं की आड़ में यौन भ्रष्टाचार आदि प्रसंग पूरे ग्रामीण भारत में द्रष्टव्य है।

· आर्थिक परिदृश्य - डॉ. प्रशान्त के शब्दों में - "डॉ. ने रोग की जड़ पकड़ ली है। इस रोग के दो कीटाणु हैं - गरीबी और जहालत" - मेरीगंज की आर्थिक स्थिति का चित्रण हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गरीबी और जहालत केवल मेरीगंज के रोग के कीटाणु नहीं हैं बल्कि हर गाँव में बड़े रोगों के कीटाणु ये दो ही हैं।

· खम्हार के प्रसंग के माध्यम से मेरीगंज का जिस प्रकार वर्णन हुआ है वह 'होरी' के गांव बेलारी तथा सेमरी में खलिहान के प्रसंग के रूप में मौजूद है। साथ ही साथ भारत के हर गाँव में भी मौजूद है।

· राजनीतिक परिदृश्य - जाति आधारित राजनीति तथा नेताओं के रूप में पूंजीपतियों तथा अपराधियों का न केवल मेरीगंज, न अमार न केवल ग्रामीण भारत बल्कि सम्पूर्ण शहरी भारत में मौजूद है।
बालदेव के हाथों में पड़ना सत्ता तथा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अहिंसा जैसे मूल्य जिस प्रकार विकृत हो जाते हैं वह ग्रामीण जनचेतना की अप्रतिपन्नता को दर्शाता है।

इसके अलावा मेरीगंज के सांस्कृतिक जीवन के प्रसंग भी किसी-न-किसी रूप में पूरे ग्रामीण भारत की संस्कृति में जीवंत हैं अतः सम्पूर्ण भारत के गाँवों के प्रतिनिधि के रूप में ~~मेरीगंज~~ प्रतीकात्मक रूप से पूरे भारत के गाँवों की नारकीय स्थिति तथा जनचेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रंगमंचीयता के धरातल पर 'भारत-दुर्दशा' और 'स्कंदगुप्त' की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रंगमंचीयता किसी नाटक की सफलता का एक पक्ष माना जाता है भारतेन्दु को रंगमंच तथा नाटक को जोड़ने के लिए जाना जाता है जबकि प्रसाद रंगमंच को निर्देशक की प्रतिभा पर छोड़ देते हैं।

इसी आलोक में भारत दुर्दशा तथा स्कंदगुप्त की रंगमंचीयता की तुलना निम्नलिखित बिन्दुओं में की जा सकती है-

→ भारत दुर्दशा में 6 अंक है तथा 6 ही दृश्य है जबकि स्कंदगुप्त में 5 अंक तथा 33 दृश्य है जो स्कंदगुप्त को लगभग अभिनेय बना देते हैं।

→ भारत दुर्दशा में एक भी दृश्य मंच नहीं है सभी दृश्यों को कुछ पर्दों तथा मेज, कुर्सी जैसी कुछ वस्तुओं के द्वारा दर्शाया जा सकता है जबकि स्कंदगुप्त

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की कथानक योजना में युद्ध, नाव, किला टूटना, सैनिक बहना जैसे अनेकों मंच दृश्य विद्यमान है। वर्तमान में प्रोजेक्टर व तकनीकों के माध्यम से ही इतना मंचन संभव है।

→ भारत दुर्दशा में पात्रों की संख्या अधिक तो है किन्तु रोचकता बनी रहती है जबकि स्कंदगुप्त में 33 से अधिक पात्र हैं तथा कुछ गौण पात्रों को अकारण महत्व दे दिया गया है।

→ भारत दुर्दशा की भाषा सहज व आम बोलचाल की भाषा है जबकि स्कंदगुप्त की भाषा दार्शनिक व स्वगत कथनों से भरपूर तत्समीकृत भाषा है जो आम आदमी के लिए बोधगम्य नहीं है। इन भाषायी जटिलता के कारण स्कंदगुप्त की अभिनेयता बाधित हुई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

→ स्कंदगुप्त के मंचन में 5 से 6 घंटे का समय लगता है जबकि भारत-दुर्दशा का मंचन एक ही घंटे में संभव है।

→ स्कंदगुप्त के गीत स्तरीय तो है किन्तु जटिल है जबकि भारत-दुर्दशा के गीत रोचक व सरल है जिससे मंचीय प्रभाव में वृद्धि होती है।

→ प्रसाद ने स्कंदगुप्त में रंग संकेत नहीं के बराबर दिए हैं जबकि भारत दुर्दशा में पर्याप्त रंगसंकेत दिए गए हैं।

वस्तुत: स्कंदगुप्त रंगमंच पर उतना सहज और सफल नहीं है जितना कि भारत-दुर्दशा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दलित-जीवन-चित्रण की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' का मूल्यांकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सद्गति कहानी में प्रेमचन्द
ने दलित जीवन के प्रति सहानुभूतिपूर्ण
दृष्टि स्पष्ट हुई है।

सद्गति कहानी मूलतः दुखी
चमार के जीवन की कथा है जिसके उसके
गाँव का पंडित घासीराम बेगार करवाता
है क्योंकि दुखी ने अपनी पुत्री के विवाह
का अनुष्ठान करवाना होता है। पण्डित
परिवार दुखी का अमानवीय शोषण
करता है तथा भूख से दुखी
की मृत्यु हो जाती है। ब्राह्मण परिवार
संवेदनहीनता के के गाँव के बाहर
फेंक आता है।

प्रेमचन्द ने सद्गति कहानी में
दलितों के अमानवीय शोषण, उनसे
ली जाने वाली बेगार का प्रामाणिक
वर्णन तो किया ही है, साथ ही

दलितों में मौजूद हीनता ग्रंथि को भी दिखलाया है। पंडिताइन द्वारा फेंके गए अंगारों से सिर जल जाने पर दुखी चमार इसे खुद की गलती मानता है कि यह तो पंडित के घर को अपवित्र करने की सजा है।

प्रेमचन्द कहना चाहते हैं कि सदियों के अंतहीन शोषण की बदौलत दलित अपने को हीन समझने लगे हैं तथा शोषण को अपनी नियति मान स्वीकार करने लगे हैं।

इसके अलावा प्रेमचंद ने सद्गति में प्रेमचंद ने दलितों में उभरत हो रही विद्रोह चेतना को भी दिखाया है। दुखी की मौत हो जाने पर चमार टोली में क्षोभ व्याप्त है तथा गोंड़ चमरौने में जाना कहता है कि वे ब्राह्मण होंगे तो अपने घर के होंगे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुलिस के आने पर ही लाश उठाई जाएगी।

इस प्रकार सद्‌गति प्रेमचन्द के चरम यथार्थवादी दौर में लिखी गई कहानी है जिसमें उन्होंने दलित शोषण तथा दलित विद्रोह चेतना को सफलता से उभारा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com